शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 नवंबर 2014
पीअर रीव्यूड रिसर्च जर्नल

सम्पादकीय

साहित्यिक खेती करे

विनोबा

साहित्यिक अगर अपने हाथ से खेती करेगा, तो वह बहुत बड़ा काम होगा। वेद में मनुष्य-जीवन को कृषि जीवन ही कहा है। पञ्च कृष्टि की समाज की बात करते हैं। वेद में पञ्चकृष्टि: यानी पांच कृषिकार, ऐसा शब्द आता है। पांच समाज यानी पांच कृषक। बल्कि, 'कृष्ण' शब्द भी कृषि से पैदा हुआ है। कृष्ण में 'कृष्' धातु है। कृष् यानी खेती करना। हिन्दुस्तान की हवा में जो भी खेती करता है, सका रंग काला हो जाता है, इसलिए 'कृष्ण' का अर्थ काला हो गया है। मूल अर्थ 'खेती करने वाला है।' शुद्ध, स्वच्छ, निर्मल जीवन खेती करने वाले का है। 'कुरल' तिरुवल्लुवर की कृति है। उसमें हमने एक सुन्दर वाक्य पढ़ा - जो खेती करके जीते हैं, वे ही जीते हैं।

हम चाहते हैं कि कवि, साहित्यिक भी एक एकड़ जमीन ले ले और सृष्टि से सम्बन्ध जोड़े। कुदरत के साथ सबका जीवन-सम्बन्ध जुड जाए, यह जरूरी है। कोई भी काम ऊँचा नहीं, कोई नीचा नहीं। उसमें समत्व-योग साधना है। उसमें अपना स्वार्थ, परार्थ की शरण में ले जाने से मानव-ह्रदय उन्नत होता है।

कवि को प्रेरणा कब मिलती है ? तीन कारणों से ही कवियों को प्रेरणा मिलती है। १ मानव ह्रदय की उन्नति २ सामाजिक समत्व, ३ प्रकृति के साथ संबंध। जब लोगों का जीवन प्रकृति के साथ जुडा हुआ होता है, तब वह जीवन उन्नत होता है। साहित्यिकों को प्रेरणा तब मिलती है, जब ह्रदय उन्नत होता है, जब प्रकृति से सम्बन्ध होता है, जब समत्व होता है।

विकास अवरोध के कुछ कारण

आधुनिक गद्य-साहित्य का धीरे-धीरे विकास हो रहा है, लेकिन साहित्य से जो अपेक्षा होती है और जो करनी चाहिए, वह पूरी नहीं हो रही है। उसका एक कारण तो यह है कि बहुतों को जीवन-कलह में टिकने की काफी कोशिश करनी पड़ती है, साहित्यिकों को भी करनी पड़ती है। उसमें बहुत-से हार खाते हैं। कई लोग लाचारी से कुछ ऐसे काम ढूंढ लेते हैं और करते हैं, जो काम स्वाभाविकत: साहित्यिक की प्रतिभा के अनुकूल नहीं होते। वैसी प्रतिकूल परिस्थिति में पड़कर भी कुछ बची हुई साहित्य की प्रतिभा का उपयोग वे कर लेते हैं। लेकिन अपेक्षापूर्ति न होने के लिए आज की परिस्थिति एक बहुत बड़ा कारण है।

दूसरी बात यह है कि ज़माना किधर जा रहा है, किधर जाना चाहिए, इसका कोई खास भान साहित्यिकों को नहीं दीखता है। वे तो उससे उलटी दिशा में ही जा रहे हैं। जगह-जगह अपने आसपास जो छोटी-मोटी समस्याये हैं और छोटे-मोटे सुख-दुःख देख पड़ते हैं, उनमें साहित्यिक उलझ जाते हैं और उसके कारण उस पार का दर्शन उन्हें नहीं होता। उनमें करुणा होती हैं, लेकिन उसकी गहराई बहुत कम होती है। कुछ साहित्यिक मजदूरों का वेतन बढे, उतने में ही

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 नवंबर 2014
पीअर रीव्यूड रिसर्च जर्नल

अपनी करूणा समाप्त कर लेते हैं। कुछ की करुणा कुटुम्ब-नियोजन के काम में ही समाप्त हो जाती है। ऐसे छोटे-छोटे कामों में अपनी कारुण्यवृत्ति को, सहानुभूति को - जो कवि ह्रदय के लिए बहुत आवश्यक होती है - वे समाधान दे लेते हैं और छोटे-छोटे मसलों में उनका चित्त गिरफ्तार हो जाता है।

तीसरी बात में यह देख रहा हूँ कि कुदरत का जो स्पर्श चाहिए - कुदरत के दर्शन का और कुदरती जीवन का - वह साहित्यिकों को नहीं होता है। उन्हें दोनों से अलग रहना पड़ता है। इसलिए स्फूर्ति का एक बहुत बड़ा स्रोत कुंठित हो जाता है।

चौथी बात देख रहा हूँ कि नए मूल्यों की खोज में, साहित्यिकों की खोज में, साहित्यिकों को भान नहीं रहता कि सच्चे मूल्य न नए होते हैं और न पुराने होते हैं। इसलिए वे बह जाते हैं और नए मूल्यों के नाम से शाश्वत मूल्यों से वंचित रह जाते हैं।

पांचवी बात है कि ह्रदय प्राणपुरुष से जुडा होना चाहिए। जो सहस्त्र वर्षों के अनुभवों से समृद्ध हैं, उनसे ह्रदय जुडा हुआ हो और बुद्धि आधुनिक प्रवाह से जुडी हुई हो, यह आवश्यक है। इस तरह का दुहरा संपर्क, अर्थात बुद्धि के जरिये आधुनिक प्रवाह से संपर्क और ह्रदय के जरिये पुराने प्रवाह से संपर्क साधना मुश्किल हो जाता है। इसलिए व्यक्ति याँ तो पुराना संपर्क करता है या आधुनिक। बुद्धि अद्यतन और ह्रदय प्राचीनतम से संपृक्त हो, यह तो एक योगी ही है। वह योग आज के साहित्यिकों को नहीं सध रहा है।

एक बात औरु जरूरी है कि साहित्यिक को मुक्तात्मा होना चाहिए, यानी उसके मन और बुद्धि दोनों में समाधान होना चाहिए। इस तरफ आजकल ध्यान नहीं दिया जता है। और असमाधान में से ही साहित्य का निर्माण होगा, यह ख़याल व्यापक बन रहा है, जो उत्तम साहित्य के निर्माण में बाधक साबित हो रहा है।